



Press Release

**आईआईटी भुवनेश्वर ने विद्यार्थी कल्याण और सुदृढ़ परिसर समुदायों के निर्माण पर
'मनस्विता' कार्यशाला का आयोजन किया**

भुवनेश्वर, 12 अक्टूबर 2026: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 11-12 अक्टूबर, 2026 को सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य, लचीलापन एवं कल्याण विषय पर दो दिवसीय क्षमता-विकास कार्यशाला '*मनस्विता: सुदृढ़ता और सहयोगी परिसर समुदायों का निर्माण*' का आयोजन किया। मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (MMTTP) के 'टीचर कनेक्ट कार्यक्रम' के अंतर्गत, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला में विशेषज्ञों और अकादमिक क्षेत्र के हितधारकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के कल्याण को सुदृढ़ करने के उपायों पर विचार-विमर्श किया।

कार्यशाला में मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण को संस्थागत कार्यप्रणालियों में समाहित करने पर विशेष ध्यान दिया गया। इसमें समस्याओं की समय रहते पहचान, शिक्षक-विद्यार्थी के बीच सहयोगपूर्ण संबंध, सहपाठी मार्गदर्शन, जीवन-कौशल तथा परिसर स्तर पर टिकाऊ हस्तक्षेपों जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक, प्रो. श्रीपद करमालकर ने कल्याण एवं खुशहाली को बढ़ावा देने में परिसर के सकारात्मक वातावरण, मानवीय जुड़ाव और समावेशी कार्यप्रणालियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "किसी व्यक्ति की खुशहाली स्वयं उस पर भी निर्भर करती है और दूसरों पर भी। इसलिए विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और उनके परिवारों की खुशहाली पर एक साथ विचार करना आवश्यक है।" उन्होंने आगे कहा कि "कोई भी दो मस्तिष्क एक जैसे नहीं होते", जो विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति खुलेपन और ग्रहणशीलता बनाए रखने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। उन्होंने संस्थान की विभिन्न कल्याणकारी पहलों का उल्लेख किया, जिनमें करियर में उन्नति के लिए पारदर्शी मानदंड, सभी हितधारकों को ध्यान में रखकर निर्णय लेना, सक्रिय सहयोगात्मक अधिगम (Active Collaborative Learning) की शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देना, खुशहाली एवं जीवन कौशल पर दो क्रेडिट का पाठ्यक्रम, सभी विद्यार्थियों के लिए साइकिल चलाने का कौशल अनिवार्य होना, परिवारों के लिए महिलाओं के नेतृत्व में संचालित विभिन्न क्लब तथा वृक्ष की छाया में विद्यार्थियों के सीखने और चिंतन करने के लिए विकसित खुली कक्षा 'चिंतन छाया' शामिल हैं।

शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के निदेशक श्री देवेंद्र कुमार शर्मा ने संकट की स्थिति में प्रतिक्रिया देने के बजाय रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करने तथा संस्थागत प्रशासन में कल्याण को समाहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। समस्याओं की समय रहते पहचान, पेशेवर सहायता प्रणालियों और विद्यार्थियों की भागीदारी के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे कार्यशाला से प्राप्त सीख को अपने-अपने संस्थानों तक ले जाएँ और उच्च शिक्षा व्यवस्था में कल्याण की संस्कृति विकसित करने में योगदान दें। उन्होंने कहा, "कल्याण शिक्षा के साथ जोड़ी जाने वाली कोई अतिरिक्त चीज़ नहीं है; यह इसकी नींव है।"

उच्च शिक्षण संस्थानों में सहभागितापूर्ण और सहयोगपूर्ण शिक्षण वातावरण विकसित करने पर विशेषज्ञ सत्र को संबोधित करते हुए आईआईटी गांधीनगर के पूर्व निदेशक एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर कुमार जैन ने विद्यार्थियों के कल्याण पर रोजमर्रा के संवाद और व्यवहार के प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, "लोग वैसे ही बनते हैं, जैसा व्यवहार आप उनके साथ करते हैं।" उन्होंने शिक्षक-विद्यार्थी के बीच सम्मानपूर्ण और सहयोगपूर्ण संबंधों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संस्थान विद्यार्थियों के प्रति निष्पक्षता, जवाबदेही और सहयोग सुनिश्चित करते हुए उच्च शैक्षणिक अपेक्षाएँ बनाए रख सकते हैं।

आईआईटी भुवनेश्वर के छात्र कार्य अधिष्ठाता प्रो. मिहिर कुमार दास ने विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और यहाँ तक कि परिसर में रहने वाले निवासियों के कल्याण एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए संस्थान द्वारा की जा रही विभिन्न पहलों पर

प्रस्तुति दी। सतत शिक्षा के अधिष्ठाता प्रो. श्यामल चटर्जी ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे और कार्यशाला की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की।

कार्यशाला में परिसर में सामाजिक जुड़ाव विकसित करने, विद्यार्थियों की समस्याओं की समय रहते पहचान करने, समयोचित हस्तक्षेप सुनिश्चित करने में संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों की भूमिका तथा जीवन-कौशल आधारित सहपाठी मार्गदर्शन पर चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने जीवनशैली से संबंधित समस्याओं और गैर-संचारी रोगों की रोकथाम पर भी विचार-विमर्श किया। विद्यार्थियों के छात्रावासों के निर्देशित भ्रमण से प्रतिभागियों को परिसर स्तर पर कल्याण संबंधी कार्यप्रणालियों तथा विद्यार्थियों को सहयोग देने में आवासीय समुदायों की भूमिका को समझने का अवसर मिला।

कार्यशाला के दूसरे दिन परिसर में कल्याण की टिकाऊ व्यवस्था विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस दौरान विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं की पहचान एवं प्रबंधन, मादक पदार्थों के सेवन की रोकथाम, पाठ्यक्रमों में कल्याण और जीवन-कौशल को समाहित करने तथा समग्र कल्याण में भारतीय ज्ञान परंपरा, अनुसंधान, नवाचार और प्रौद्योगिकी के योगदान जैसे विषयों पर सत्र आयोजित किए गए।

कार्यशाला के एक प्रमुख घटक के रूप में संस्थागत विद्यार्थी कल्याण कार्ययोजनाएँ विकसित करने और प्रस्तुत करने के लिए समूह गतिविधि आयोजित की गई। इसमें शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधियों, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों और आईआईटी भुवनेश्वर ने भाग लिया। इस गतिविधि का उद्देश्य प्रतिभागियों को विचार-विमर्श और कार्यशाला से प्राप्त सीख को अपने-अपने संस्थानों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक पहलों में बदलने के लिए प्रोत्साहित करना था।

समापन सत्र में, प्रो. श्यामल चटर्जी, अधिष्ठाता (सतत शिक्षा) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विद्यार्थियों का कल्याण संस्थान की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने समस्याओं की रोकथाम, समय रहते हस्तक्षेप, मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित परिसर के निर्माण तथा पाठ्यक्रम और परिसर की गतिविधियों में कल्याण संबंधी पहलुओं को शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि विद्यार्थियों को अपनी समस्याएँ खुलकर साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच की दूरी कम करना तथा उनके बीच मैत्रीपूर्ण, सहज और विश्वासपूर्ण संबंध विकसित करना आवश्यक है।

अपने समापन संबोधन में, श्री देवेंद्र कुमार शर्मा ने इस बात पर जोर दिया कि संकाय सदस्यों को संस्थागत हस्तक्षेप की प्रतीक्षा करने के बजाय विद्यार्थियों के कल्याण की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच की दूरी को कम करने के लिए खुले, मैत्रीपूर्ण और सहयोगपूर्ण संबंध विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही, उन्होंने उच्च शिक्षण संस्थानों से शोध और शिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थियों के कल्याण को भी प्राथमिकता देने का आग्रह किया। अंत में, कार्यशाला के संयोजक डॉ. अनिर्बान भट्टाचार्य ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस कार्यशाला में 25 संस्थानों के लगभग 90 प्रतिभागियों तथा पूरे भारत से आए 20 से अधिक विशेषज्ञों ने भाग लिया।

विशेषज्ञों के नेतृत्व में आयोजित सत्रों, संवादात्मक चर्चाओं, अनुभवों के आदान-प्रदान और संस्थागत कार्ययोजना निर्माण के माध्यम से 'मनस्विता' ने विद्यार्थी कल्याण तथा सुदृढ़ परिसर समुदायों के विकास के लिए सक्रिय, समावेशी और टिकाऊ दृष्टिकोण अपनाने के महत्त्व को रेखांकित किया।
